भाकृअनुप -केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान,मुंबई ने प्रद्वारा शिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

'जलकृषि एवं मिल्लेट;बाजरे की खेती: जनजातीय समुदायों के लिए आजीविका के संभावित विकल्प'

(आदिवासी उपयोजना के तहत)

भाकृअनुप -केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान,मुंबई ने **'जलकृषि एवं मिल्लेट;बाजरे की खेती** विषय पर दिनांक 8 मार्च, 2023 को जनजातीय उप-योजना के तहत दिम्बे जलाशय (पुणे, महाराष्ट्र) में प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। बाजरे की खेती: आदिवासी समुदायों के लिए संभावित आजीविका विकल्प' कार्यक्रम में जुन्नार और अंबेगांव ब्लॉक के शिवेचिवाड़ी और चिखली गांवों के 60 आदिवासी मछुआरों (पुरुष-54, महिला-6) ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य दिम्बे और माणिकदोह जलाशयों के पास रहने वाले मछुआरों के लिए एक लाभदायक आजीविका विकल्प के रूप में पिंजरा जलीय कृषि गतिविधियों, और मूल्यवर्धित मछली उत्पादों और बाजरा उत्पादों को प्रदर्शित करना और उनके लिए रोजगार और आय के अवसर पैदा करने की क्षमता के बारे में जागरूक करना था।

डॉ. शिवाजी अर्गडे, वैज्ञानिक (आईसीएआर-सीआईएफई) ने श्री संतोष खामकर (सीआईएफई प्रवर्तित एक्वाप्रेन्योर और फीश एक्वा टूरिज्म के संस्थापक) द्वारा स्थापित दिंभे जलाशय में पिंजरा जलीय कृषि इकाई के लिए फील्ड एक्सपोजर विजिट का समन्वय किया। उन्होंने तिलापिया के लिए केज एक्वाकल्चर प्रथाओं और अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए इसकी मार्केटिंग रणनीतियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने फिश फिलेट और फिश वड़ा बनाने का भी प्रदर्शन किया। डॉ. किरण रसाल, वैज्ञानिक (आईसीएआर-सीआईएफई) ने पिंजरा जलकृषि में मछली की संभावित प्रजातियों और उनकी पालन-पद्धतियों पर प्रकाश डाला। श्री अरविंद मोहरे (कृषि सहायक, दिंभे) ने भी बाजरा का महत्व और इसके पोषण मूल्य पर प्रकाश डाला

श्री आशितोष अटकरी (यशश्री फिशरीज के संस्थापक) ने प्रतिभागियों को केंद्र और राज्य सरकार द्वारा आदिवासी लोगों के लिए पेश की गई मत्स्य कल्याण योजनाओं के बारे में बताया और उनसे इसका लाभ उठाने का आग्रह किया। सभी प्रतिभागियों को "अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस" के अवसर पर मूल्य वर्धित मछली उत्पाद पुस्तिका और बाजरा उत्पाद पुस्तिका वितरित की गई। आदिवासी महिलाओं और शारीरिक रूप से विकलांग मछुआरों को लिंग अनुकूल मछली पकड़ने के जाल का एक सेट वितरित कर सम्मानित किया गया। मानिकदोह और दिंभे जलाशयों के पास रहने वाले चयनित 40 जरूरतमंद आदिवासी पुरुषों और महिला मछुआरों (7.5 किलोग्राम प्रत्येक) को लगभग 300 किलोग्राम मछली पकड़ने के जाल वितरित किए गए।